International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके समायोजन के प्रभाव का अध्ययन

रवि बोखारे
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. आलोक शर्मा
प्राचार्य, आयुषमति कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल

प्रस्तुत शोधपत्र में म.प्र. राज्य के बैतूल जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 150 महिला शिक्षकों का चयन कर उन पर डॉ. एस.के. मंगल की 'मंगल टीचर एडजस्टमेंट इंवेन्ट्री' एवं डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी. एन. मुथा की 'शिक्षण प्रभावशीलता मापनी' का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन', 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' तथा समग्र समायोजन का सार्थक प्रभाव पाया गया तथा उपरोक्त सभी क्षेत्रों में उच्च समायोजन स्तर वाली महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता, निम्न समायोजन स्तर वाली महिला शिक्षकों से बेहतर पायी गयी परंतु 'व्यतिगतक जीवन में समायोजन' का महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

''शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है, अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का भी असफल होना अवश्यम्भावी है, अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है।''

– हुमायूँ कबीर

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्राचीन भारतीय शिक्षा–व्यवस्था मे अध्यापक को 'आचार्य' का नाम दिया गया है। भारतीय साहित्य में भी आचार्य की महिमा का गान किया गया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में कहा है –

''मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव।''

अर्थात् बालक के लिए माता–पिता, आचार्य–तीनों ही देवता स्वरूप होते हैं। 'आचार्य' अथवा 'आचार्या' नाम आदर्श आचार से युक्त आदर्श व्यक्ति का है। 'आचार्य' का कार्य केवल अध्ययन और शिक्षण ही नहीं है, विद्यार्थियों को आचारवान् बनाना भी है।

अध्यापक का शिक्षा में महत्तवपूर्ण स्थान है। जे. एफ. ब्राउन लिखते है – ''समस्त बातों को ध्यान में रखकर मैं इस परिणाम पर पहुँचता हूँ कि 'अध्यापक' शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग होता है। पाठ्यक्रम, विद्यालय संगठन और पाठन–सामग्री यद्यपि अध्यापन के महत्त्वपूर्ण अंग है, परन्तु वे सभी तब तक निष्प्राण रहते हैं जब तक कि अध्यापक के सजीव व्यक्तित्व द्वारा उनमें प्राण–प्रतिष्ठा नहीं कर दी जाती है।''

अतः किसी भी विद्यालय का भवन, छात्र, सहायक सामग्री आदि कितनी भी प्रभावशाली क्यों न हों, जब तक वहाँ के अध्यापक चरित्रवान तथा योग्य नहीं होंगे, उस विद्यालय का शिक्षण–स्तर उन्नत नहीं हो सकता। बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षक को बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य करना पड़ता है। शिक्षक ही वास्तव में बालक का समुचित शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास कर सकता है। विद्यालय में शिक्षक को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ती है। सम्पूर्ण विद्यालय योजनाओं को वही व्यवहारिक रूप देता है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में अच्छी से अच्छी शिक्षण पद्धति प्रभाव रहित हो जाती है।

अतः स्पष्ट है कि यदि हमें अपने देश को विकसित देश बनाना है तो उसके लिये हमें प्रभावशाली अध्यापक तैयार करने होंगे, साथ ही ग्रामीण व पिछड़ें क्षेत्र में कार्य करने वाले शिक्षकों एवं मुख्यतः महिला को विशेष प्रकार से प्रोत्साहन देना होगा जिससे की ग्रामीण क्षेत्र में भी अच्छे अध्यापक अपनी सेवाएं प्रदान करें। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यालयों कार्यरत महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना है, जिससे की यह ज्ञात हो सके की समायोजन का महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई प्रभाव पड़ता है या नहीं। अतः प्रस्तुत शोध इसी दिशा में एक प्रयास है।

शिक्षक प्रभावशलीता से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोधकार्य हुये है। **दोषी, प्रवीण (2004)** ने अपने अध्ययन में पाया कि पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता महिला शिक्षकों से अधिक पाई गई। अतः उपरोक्त शोधकार्यो से ही इस शोधकार्य को करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। **जायसवाल, विजय एवं नायक, संतोष कुमार (2007) के** अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की शिक्षण दक्षता पर उनके समायोजन का प्रभाव पड़ता है। उच्च समायोजित अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की शिक्षण दक्षता, निम्न समायोजित अध्यापकों तथा

अध्यापिकाओं की तुलना में अधिक है। **खातून, सालेहा (2011)** ने अपने अध्ययन में पाया कि अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में लिंग के आधार पर कोई अंतर नहीं पाया गया। **शुक्ला, हरगोविन्द (2013)** ने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र तथा शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **चौबे, ऋतु एवं खंडाई, हेमंत (2018)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि निमाड़ क्षेत्र के खंडवा जिले के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **सिंह, धर्मेन्द्र (2018)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि प्रारम्भिक स्तर पर महिला अध्यापकों की कुल व्यवसायिक प्रभावशीलता पुरूष अध्यापकों से अधिक है तथा राजकीय एवं अराजकीय विद्यालय अध्यापकों की कुल व्यवसायिक प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

उद्देश्य :–

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर उनके समायोजन का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

उपकरण :–

1. शिक्षक प्रभावशीलता मापनी – डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा
2. मंगल टीचर एडजस्टमेंट इंवेन्ट्री – डॉ. एस.के. मंगल एवं डी.एन. मुथा

विधि :–

सर्वप्रथम बैतूल जिले में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत 150 महिला शिक्षकों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर डॉ. एस.के. मंगल की 'मंगल टीचर एडजस्टमेंट इंवेन्ट्री' एवं डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा की 'शिक्षक प्रभावशीलता मापनी' का प्रशासन किया गया तथा मंगल टीचर एडजस्टमेंट इंवेन्ट्री में दिये गये समायोजन के सभी क्षेत्रों का अलग–अलग फलांकन किया गया तथा उसके आधार पर समस्त महिला शिक्षकों को उच्च समायोजन स्तर व निम्न समायोजन स्तर वर्ग में वर्गीकृत किया गया एवं शिक्षक प्रभावशीलता मापनी के प्राप्तांकों का फलांकन कर मॉस्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण :–

तालिका

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर समायोजन के प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समायोजन के क्षेत्र	समायोजन स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन	उच्च	81	303.22	26.13	4.64	< 0.01
	निम्न	69	285.32	21.15		
सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन	उच्च	72	305.24	26.44	5.06	< 0.01
	निम्न	78	285.53	20.64		
व्यावसायिक संबंधों में समायोजन	उच्च	79	303.03	26.72	4.36	< 0.01
	निम्न	71	286.04	20.86		
व्यक्तिगत जीवन में समायोजन	उच्च	86	298.14	26.70	1.80	> 0.05
	निम्न	64	290.75	23.31		
वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि	उच्च	68	306.35	24.15	5.39	< 0.01
	निम्न	82	285.56	22.74		
समग्र समायोजन	उच्च	79	303.27	26.49	4.50	< 0.01
	निम्न	71	285.77	20.98		

स्वतंत्रता के अंश – 148 0.05, 0.01 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 1.98, 2.61

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत उच्च एवं निम्न 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन', 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' तथा समग्र समायोजन स्तर वाली महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 4.64, 5.06, 4.36, 5.39, 4.50 स्वतंत्रता के अंश 148 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.61 से अधिक हैं जबकि उच्च एवं निम्न 'व्यतिगत जीवन में समायोजन' स्तर वाली महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है, क्योंकि इसके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.80 स्वतंत्रता के अंश 148 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 से कम है।

अतः इन परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत उच्च एवं निम्न 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन', 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' तथा समग्र समायोजन स्तर वाली महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर पाया गया तथा उपरोक्त सभी क्षेत्रों में उच्च समायोजन स्तर वाली महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता, निम्न समायोजन स्तर वाली महिला शिक्षकों से बेहतर पायी गयी। उच्च एवं निम्न 'व्यतिगतक जीवन में समायोजन' स्तर वाली महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन', 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' तथा समग्र समायोजन का सार्थक प्रभाव पाया गया परंतु 'व्यतिगतक जीवन में समायोजन' का महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

निष्कर्ष :–

महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन', 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' तथा समग्र समायोजन का सार्थक प्रभाव पाया गया तथा उपरोक्त सभी क्षेत्रों में उच्च समायोजन स्तर वाली महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता, निम्न समायोजन स्तर वाली महिला शिक्षकों से बेहतर पायी गयी परंतु 'व्यतिगतक जीवन में समायोजन' का महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

1. अग्रवाल, जे.सी (1972) **विद्यालय प्रशासन**, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली
2. भाई, योगेन्द्रजीत (1974) **शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन**, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. भारद्वाज, दिनेशचंद्र (नवीन संस्करण) **विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा**, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
4. चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद (1958) **जनतन्त्रात्मक विद्यालय संगठन**, भारत पब्लिकेशन आगरा
5. प्रसाद, केशव (नवीन संस्करण) **विद्यालय व्यवस्था**, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6. शर्मा, आर.ए. (1995) **शिक्षा अनुसंधान**, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
7. शर्मा, आर.ए. (2001) **विद्यालय संगठन तथा शिक्षा प्रशासन**, आर. लाल बुक डिपो मेरठ

Journals :

1. Khatoon, Saliha (2011) Emotioanl etetligence effective teaching of D. ED & B. ED level school teachers. The CTE National Journal, Vol. IX, No. 1, Jan.-June 2011, Page No, 64-68
2. दोषी, प्रवीण (2004) "प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन", प्राइमरी शिक्षा, अप्रैल 2004, पेज 25 से 33
3. शुक्ला, हरगोविन्द (2013) "हाईस्कूल के विद्यार्थियों की गणित विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर बुद्धि, पारिवारिक एवं विद्यालयीन वातावरण तथा शिक्षण प्रभावशीलता के प्रभाव का अध्ययन", अप्रकाशित शोध प्रबंध, म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल
4. चौबे, ऋतु एवं खंडाई, हेमंत (2018) ''निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन'', International Research Journal of Human Resources & Social Sciences Vol. 5, Issue 1 Jan 2018, pp. - 647-651
5. जायसवाल, विजय एवं नायक, संतोष कुमार (2007) : प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं आध्यापिकों के शिक्षण दक्षता पर उनके समायोजन के प्रभाव का अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, नई दिल्ली, जुलाई 2007, पेज 113 से 123
6. सिंह, धर्मेन्द्र (2018) ''प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों की व्यवसायिक प्रभावशीलता का अध्ययन'', International Education Journal Chetana 17 March 2018 pp. - 243-250